

तीतुस 1:5-16

पादरी पत्रों में (1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस) पौलुस विशेष रूप से दो युवा प्रचारकों को चेतावनी देते हैं और उन्हें विभिन्न प्रकार की विधर्मी शिक्षाओं से निपटने के लिए तैयार करते हैं, जिन्हें ग्नोस्टिसिज्म कहा जाता था, जो कई प्रारंभिक चर्चों में फैल रहा था, विशेष रूप से उन चर्चों में जो मुख्य रूप से गैर-यहूदी परिवर्तितों से बने थे।

1. जहाँ यहूदी धर्मांतरितों की संख्या अधिक थी, वहाँ की चर्चों को "खतना पार्टी" या "यहूदियों" की झूठी शिक्षाओं से संघर्ष करना पड़ा, जो यह जोर देते थे कि गैर-यहूदी धर्मांतरितों को पहले खतना कराना और विभिन्न खाद्य नियमों और अन्य नियमों का पालन करना आवश्यक है, तभी वे मसीही बन सकते हैं। वे तर्क देते थे कि चूंकि यीशु यहूदी मसीहा थे, इसलिए जो उनके शिष्य बनना चाहते थे, उन्हें पहले यहूदी कानूनों का पालन करना होगा तभी वे मसीही बन सकते हैं।
2. जहाँ गैर-यहूदियों की संख्या अधिक थी, वहाँ की चर्चों को भी झूठी शिक्षाओं से संघर्ष करना पड़ा, लेकिन प्रचारित मूढ़धर्म यूनानी दर्शन में निहित था और इसे द्वैतवाद कहा जाता था। यह शिक्षा यहूदियों की शिक्षा से भिन्न थी, लेकिन लक्ष्य समान था। दोनों समूहों ने उद्धार के लिए "कर्म" की आवश्यकता रखी। यहूदियों ने उद्धार की शर्त के रूप में खतना और विभिन्न यहूदी कानूनों का पालन माँगा। ग्नोस्टिक शिक्षकों ने शरीर पर कड़ी पाबंदी (जैसे खाद्य नियम और ब्रह्मचर्य) को बढ़ावा दिया ताकि आत्मा को उसके दुष्ट शरीर से मुक्त कर भगवान के साथ रह सके।

इन दोनों समूहों में त्रुटि थी और उन्होंने उन विचारों को बढ़ावा दिया जो यीशु और प्रेरितों द्वारा सुसमाचार के संबंध में सिखाए गए सिद्धांतों के विपरीत थे। "सुसमाचार" यह घोषणा करता है कि उद्धार परमेश्वर की कृपा से स्वतंत्र रूप से दिया गया था और विश्वास के आधार पर प्राप्त किया जाता है, जो प्रारंभ में पश्चाताप और बपतिस्मा के माध्यम से व्यक्त किया जाता है (प्रेरितों के काम 2:38). तीतुस को अपने पत्र में, पौलुस इस प्रचारक को व्यावहारिक रूप से यह बताता है कि वह कैसे झूठी शिक्षाओं और उन शिक्षकों से बचाव करे जो इन विधर्मों को बढ़ावा देते हैं:

1. ध्वनि सुसमाचार को संरक्षित करें और आगे बढ़ाएं जो उसे सिखाया गया था।
2. ध्वनि नेताओं को प्रशिक्षित करें और नियुक्त करें जो वही करेंगे।

रूपरेखा — टाइटस

आइए हम अपनी रूपरेखा की समीक्षा करें ताकि हम अपनी अध्ययन में जिस बिंदु पर हैं उसे ठीक कर सकें:

1. प्रणाम - पौलुस का मिशन - 1:1-4 सुदृढ़ शिक्षाओं को बनाए रखना और आगे बढ़ाना - 1:1-4

मुख्य भाग - टाइटस का मिशन - 1:5-3:11

1. सुदृढ़ बुजुर्गों की नियुक्ति करना - 1:5-16
2. सुदृढ़ शिक्षाएँ प्रदान करना - 2:1-3:11

निष्कर्ष - 3:12-15

1. व्यक्तिगत अभिवादन / निर्देश - 3:12-15

पिछले अध्याय में हमने अभिवादन की समीक्षा की। इस अध्याय में हम टाइटस की सेवा के संबंध में पौलुस के निर्देशों के एक भाग की जांच करेंगे।

टाइटस का मिशन: सुदृढ़ बुजुर्गों की नियुक्ति – टाइटस **1:5-9**

मैंने तुझे क्रेते में इसलिए छोड़ा था कि वहाँ जो कुछ अधूरा रह गया है, तू उसे ठीक-ठाक कर दे और मेरे आदेश के अनुसार हर नगर में बुजुर्गों को नियुक्त करे।

- तीतुस 1:5

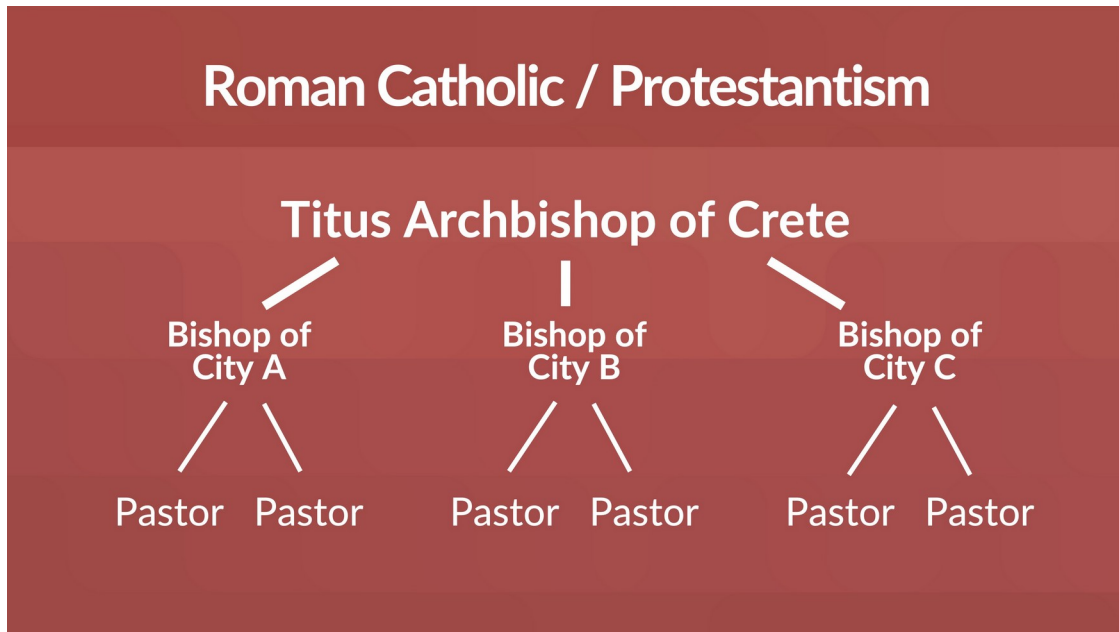
पौलुस ने पहले टाइटस का विभिन्न तरीकों से उपयोग किया था। उदाहरण के लिए, उसने टाइटस को कोरिंथ भेजा था ताकि प्रेरित के पहले पत्र में दिए गए विशिष्ट निर्देशों के प्रकाश में इस चर्च की प्रगति की निगरानी कर सके (2 कुरिंथियों 7:13-16)। पौलुस की पहली रोमन कैद से रिहाई के बाद वह विभिन्न स्थानों की यात्रा की ताकि प्रचार कर सके (जैसे क्रीट), और उन चर्चों में वापस गया जिन्हें उसने पहले स्थापित किया था ताकि उनकी निरंतर निष्ठा को प्रोत्साहित कर सके और मसीह में उनकी वृद्धि के संबंध में और निर्देश प्रदान कर सके। पद 5 में, पौलुस इस पत्र के ऐतिहासिक संदर्भ और उद्देश्य को याद करता है जो टाइटस को लिखा गया था। उसने क्रीट में प्रचार किया और एक चर्च की शुरुआत की लेकिन वहाँ इतने समय तक नहीं रुका कि बने समूहों को परिपक्व कर सके। यह कार्य उसने टाइटस को सौंप दिया था साथ ही इस वर्तमान पत्र में दिए गए अतिरिक्त निर्देश भी, जो पौलुस की 62-64 ईस्वी के बीच की संक्षिप्त स्वतंत्रता के समय में युवा सुसमाचारक को लिखा और भेजा गया था।

तदनुसार, टाइटस को पूजा और सेवा के लिए चर्च को व्यवस्थित करने के लिए छोड़ा गया था। उसके कार्यों में से एक हर शहर में बुजुर्गों की नियुक्ति करना था। हम देखते हैं कि केवल इस एक पद में काफी जानकारी निहित है।

1. "वरिष्ठों को नियुक्त करना" केवल 'चुनने या चुनने' का अर्थ नहीं है, बल्कि उन लोगों को स्थापित करना है जो चर्च का नेतृत्व करने के लिए योग्य हों। पौलुस की लिखित अधिकारिता ने टाइटस, एक सुसमाचार प्रचारक, को व्यावहारिक अधिकार दिया कि वह स्थानीय सभा में नेतृत्व के पदों पर कुछ योग्य पुरुषों की "आधिकारिक" रूप से प्रशंसा करे।

2. यह भी ध्यान दें कि उसे "वरिष्ठों" - बहुवचन - को उठाना था। जाहिर है कि कई शहरों में चर्च थे और प्रत्येक चर्च में कई वरिष्ठ होने चाहिए थे।
3. किसी एक व्यक्ति को कई चर्चों या शहरों का बिशप या वरिष्ठ नहीं बनाया गया था। प्रत्येक सभा की अपनी नेतृत्व व्यवस्था होती थी जिसमें कई वरिष्ठ शामिल होते थे।

कई टीकाकार तीतुस को क्रीट का पहला "बिशप" बताते हैं और तर्क देते हैं कि एक प्रकार के "आर्च-बिशप" के रूप में उसने अन्य पुरुषों को नेतृत्व पदों पर नियुक्त किया जो चर्च पदानुक्रम में उसकी अधीनता में रहे:



यदि आप इस पद को कैथोलिक या प्रोटेस्टेंट संप्रदायिक दृष्टिकोण से देखें तो आप यही देखेंगे; एक ऐसा ढांचा जो चर्च संगठन के बारे में पूर्वनिर्धारित धारणा के अनुरूप सटीक बैठता है। हालांकि, यदि हम टाइटस की भूमिका और अधिकार को केवल बाइबिलीय दृष्टिकोण से देखें, नए नियम को स्वयं बोलने और स्वयं की व्याख्या करने दें, तो हम एक अलग तस्वीर देखते हैं:

- टाइटस एक सुसमाचार प्रचारक था, बिशप/पादरी/वरिष्ठ नहीं (ध्यान दें कि पौलुस कभी भी टाइटस को इस तरह संबोधित या संदर्भित नहीं करता)।
- सुसमाचार प्रचारक का कार्य सुसमाचार की प्रचार और परमेश्वर के वचन की शिक्षा द्वारा चर्चों की स्थापना और संगठन करना था।
- सुसमाचार प्रचारक, विशेष रूप से प्रारंभिक चर्च में, कई विभिन्न सभाओं की सेवा करते थे जो विकास के विभिन्न चरणों में थीं।
- टाइटस क्रीट के सभी चर्चों का प्रभारी नहीं था, लेकिन वह सभी की सेवा एक सुसमाचार प्रचारक के रूप में करता था।

- वह सभी अन्य बिशपों का मुख्य बिशप नहीं था; वह पौलुस द्वारा नियुक्त एक सुसमाचार प्रचारक था जो द्वीप के प्रत्येक व्यक्तिगत चर्च में नेतृत्व संरचना स्थापित करता था।
- जब ये पुरुष वरिष्ठों (चर्च नेताओं के लिए एक अन्य शब्द) के रूप में नियुक्त किए गए, तो वे अपनी स्थानीय सभा के प्रभारी थे, न कि टाइटस।
- हम यह भी नोट करते हैं (चर्च संगठन और नेतृत्व के विषय पर नए नियम की शिक्षाओं की समीक्षा करके) कि स्थानीय वरिष्ठ केवल उस सभा के लिए जिम्मेदार थे जहाँ वे सेवा करते थे और किसी अन्य के लिए नहीं। उनकी अधिकारिता स्वचालित रूप से किसी अन्य चर्च में स्थानांतरित नहीं होती थी।

एक बार पॉल ने समग्र मिशन (हर शहर/चर्च में बुजुर्गों को स्थापित करने के लिए) घोषित किया, उसने टाइटस को उन पुरुषों के प्रकार के बारे में विवरण दिया जिन्हें उसे देखना था, टाइटस 1:6-9। इस पत्र में बुजुर्गों के लिए दिए गए योग्यताओं की सूची में 1 तीमुथियुस 3:2-7 के साथ समानताएँ थीं, लेकिन पॉल ने टाइटस को अपने पत्र में और अधिक विवरण जोड़े:

1. दोषरहित (पद 6)

उसे नियुक्त तभी किया जाये जब वह निर्दोष हो। एक पत्नी व्रती हो। उसके बच्चे विश्वासी हों और अनुशासनहीनता का दोष उन पर न लगाया जा सके। तथा वे निरकुश भी न हों।

- तीतुस 1:6

एक ऐसा व्यक्ति जिसे चर्च के अंदर या बाहर किसी गलत काम या नैतिक विफलता का आरोप नहीं लगाया जा सकता।

2. एक पत्नी का पति (पद 6)

जैसा कि 1 तीमुथियुस के अध्ययन में उल्लेख किया गया है जहाँ यह समान वाक्यांश उपयोग किया गया है: एक ऐसा पुरुष जो केवल एक महिला का हो और जिसकी विवाहित जीवन शुद्ध हो। एक ऐसा पुरुष जो केवल अपनी पत्नी पर केंद्रित हो और अन्य महिलाओं के साथ कोई अनुचित संबंध न रखता हो।

3. ऐसे बच्चे होना जो विश्वास करें और आचरण करें (छंद 6)

केवल वे बच्चे ही नहीं जो बपतिस्मा प्राप्त कर चुके हैं, बल्कि वे भी जो अपने आप को मसीही के रूप में प्रस्तुत करते हैं। विद्रोह = अवज्ञा; व्यर्थता = बर्बादी। यदि कोई व्यक्ति अपने स्वयं के बच्चों में स्थायी विश्वास स्थापित करने में सफल नहीं हुआ है, तो चर्च उसे चर्च के विश्वास और आध्यात्मिक जीवन की जिम्मेदारी क्यों देगा?

4. चर्च पर एक अच्छा प्रबंधक बनने में सक्षम (पद 7)

निरीक्षक को निर्दोष तथा किसी भी बुराई से अछूता होना चाहिए। क्योंकि जिसे परमेश्वर का काम सौंपा गया है, उसे अड़ियल, चिड़चिड़ा और दाखमधु पीने में उसकी रूचि नहीं होनी चाहिए। उसे झगड़ालू, नीच कमाई का लोलुप नहीं होना चाहिए

- तीतुस 1:7

पौलुस ने परिवार या समाज में निर्दोष होने की आवश्यकता का उल्लेख किया है। यहाँ वह इस योग्यता को दोहराते हैं और बताते हैं कि कोई इस प्रतिष्ठा को चर्च में कैसे प्राप्त करता है। वह नकारात्मक बातों से शुरू करते हैं, कि बुजुर्ग क्या नहीं होने चाहिए:

- स्वार्थी नहीं (पद 7)। सलाह या सुधार स्वीकार नहीं करता / हर मुद्दे पर हर बार जीतना चाहता है।
- क्रोधी नहीं (पद 7)। अपनी भावनाओं और अपनी भाषा को नियंत्रित कर सकता है; दूसरों के दृष्टिकोण को समझ सकता है।
- शराब का आदी नहीं (पद 7)। नशेड़ी नहीं। यहाँ 'आदी' शब्द महत्वपूर्ण है - नशे, शराब, आइसक्रीम, खरीदारी आदि का आदी नहीं।
- लड़ाकू नहीं (पद 7)। गुंडा नहीं, आसानी से उकसाने वाला नहीं, अत्यधिक संवेदनशील नहीं, झगड़ालू नहीं।
- अशुद्ध लाभ का शौकीन नहीं (पद 7)। जुआ या अन्य अनैतिक तरीकों से धन कमाने का शौक नहीं। कुछ लोग योजना या चोरी से पैसा इकट्ठा करने के लिए ईमानदार काम या व्यापार से तीन गुना अधिक मेहनत करते हैं।

पौलुस फिर उन सकारात्मक गुणों की ओर मुड़ते हैं जो एक चर्च नेता के पास होने चाहिए और जिन्हें उसे निरंतर विकसित करना चाहिए:

⁸ बल्कि उसे तो अतिथियों की आवभगत करने वाला, नेकी को चाहने वाला, विवेकपूर्ण, धर्मी, भक्त तथा अपने पर नियन्त्रण रखने वाला होना चाहिए। ⁹ उसे उस विश्वास करने योग्य संदेश को दृढ़ता से धारण किये रहना चाहिए जिसकी उसे शिक्षा दी गयी है, ताकि वह लोगों को सद्शिक्षा देकर उन्हें प्रबोधित कर सके। तथा जो इसके विरोधी हों, उनका खण्डन कर सके।

- तीतुस 1:8-9

- अतिथि सत्कार करने वाला (पद 8)। ग्रीक में इस शब्द का अर्थ है, "परिचितों का प्रेमी"। केवल भोजन और आश्रय स्वेच्छा से प्रदान करना ही नहीं, बल्कि वह व्यक्ति जो विभिन्न संस्कृतियों और

पृष्ठभूमियों से आने वालों को स्वीकार करता है। अतिथि सत्कार प्रचार का एक सबसे प्रभावी माध्यम है।

- अच्छाई से प्रेम करने वाला (पद 8)। जो लाभकारी चीजों का प्रेमी हो। दूसरों के लिए भलाई करना और भलाई होते देखना पसंद करता है; अच्छे कार्य के लिए उत्साही।
- समझदार (पद 8)। संयमित मन वाला। भावना से नियंत्रित नहीं। केवल अपने लिए "नाटक" नहीं बनाता। विवेकशील।
- न्यायी (पद 8)। ऐसा आचरण जो हमारे दैवीय न्यायाधीश प्रभु की स्वीकृति प्राप्त करता है। एक न्यायी व्यक्ति प्रभु को प्रसन्न करने वाले तरीके से जीवन बिताता है।
- भक्त (पद 8)। प्रभु की बातों के प्रति समर्पित: उनका वचन, उनकी सभा, उनके नाम में सेवा।
- आत्मसंयमी (पद 8)। शाब्दिक अर्थ है "शक्ति पर नियंत्रण में"। इसका अर्थ है कि उसका प्रेम और भक्ति परमेश्वर के प्रति इतना कमजोर नहीं कि वह बार-बार सांसारिकता में लौटे, और न ही इतना अधिक धार्मिक उत्साह कि वह आत्म-धार्मिकता और गर्व की ओर ले जाए। आध्यात्मिक जीवन के दो चरम सीमाओं से बचने की शक्ति।
- परमेश्वर के वचन को दृढ़ता से पकड़ना (पद 9)। बुजुर्ग, जैसे तीमुथियुस, तीतुस और पौलुस, को सुसमाचार और प्रेरितों तथा उनके शिष्यों से प्राप्त शिक्षाओं को बनाए रखना चाहिए। उन्हें इन शिक्षाओं को बदलने, जोड़ने या हटाने की अनुमति नहीं थी। ऐसा करने से वे चर्च को सुसंगत शिक्षाओं के साथ सिखाने में सक्षम होंगे और उन झूठी शिक्षाओं को सुधारने या खंडित करने में भी सक्षम होंगे जो उन्होंने स्वयं सिखाई थीं। बुजुर्गों ने पौलुस और उनके सहकर्मियों: तीमुथियुस और तीतुस द्वारा दी गई विश्वास को जाना, सिखाया और रक्षा की।

फिर से, 1 तीमुथियुस में जो था उसकी एक नकल सूची नहीं बल्कि योग्यताओं की एक पूरक सूची जो मुख्य आवश्यकताओं की पुष्टि करती है (आध्यात्मिक रूप से परिपक्व विवाहित पुरुष जिनके विश्वासी बच्चे हों)।

ध्वनि बुजुर्गों की आवश्यकता – टीतुस **1:10-16**

एक बार पौलुस ने बुजुर्गों के रूप में सेवा करने वाले पुरुषों में देखे जाने वाले योग्यताओं को स्पष्ट कर दिया, वह टाइटस को याद दिलाता है कि चर्च को इस प्रकार के नेताओं की आवश्यकता क्यों है।

¹⁰ यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से लोग विद्रोही होकर व्यर्थ की बातें बनाते हुए दूसरों को भटकाते हैं। मैं विशेष रूप से यहूदी पृष्ठभूमि के लोगों का उल्लेख कर रहा हूँ। ¹¹ उनका तो मुँह बन्द किया ही जाना चाहिए। क्योंकि वे जो बातें नहीं सिखाने की हैं, उन्हें सिखाते हुए घर के घर बिगाड़ रहे हैं। बुरे रास्तों से धन कमाने के लिये ही वे ऐसा करते हैं।

वह उस चरित्र, प्रेरणा और क्षति का वर्णन करता है जो झूठे शिक्षक उस चर्च में कर रहे थे जहाँ टाइटस सेवा कर रहा था:

1. चरित्र – विद्रोही: परमेश्वर के वचन और जो इसे सिखाते हैं, उनकी अवज्ञा करने वाले। खाली बोलने वाले: उनकी शिक्षा और विचारों में कोई आध्यात्मिक मूल्य नहीं था और वे कोई आध्यात्मिक फल नहीं देते थे। धोखेबाज: वे केवल गलत या अनजान नहीं थे, वे जानते थे कि जो वे प्रचार करते थे वह झूठ था। वे यहूदी थे (खतना), लेकिन वे यहूदीकरण करने वालों/खतना पार्टी का हिस्सा नहीं थे जो गलती में थे, बल्कि वे मानते थे कि वे परमेश्वर की इच्छा कर रहे हैं।
2. प्रेरणा – यहूदीकरण करने वालों के विपरीत जो एक बड़े परिवर्तन के बीच अपनी यहूदी विरासत की रक्षा कर रहे थे, ये यहूदी लालच और धन के प्रेम से प्रेरित थे। वे धार्मिक ठग थे जो ऐसी शिक्षाओं से लाभ कमाने की कोशिश कर रहे थे जिन्हें वे झूठा जानते थे।
3. क्षति – टाइटस को उन्हें चुप कराने (मौन करने) के लिए कहा गया क्योंकि उनका मामला केवल धार्मिक विषय पर मतभेद नहीं था, बल्कि ऐसी शिक्षा थी जो पूरे परिवारों के विश्वास और उद्धार को खतरे में डालती थी। वे पहले अपने झूठे विचारों से परिवारों को प्रभावित करते थे और इसे पूरे सभा को संबोधित करने के लिए आधार बनाते थे। टाइटस और जो बुजुर्ग उन्होंने नियुक्त किए थे, उनके पास झूठी शिक्षा का खंडन करने का ज्ञान होना चाहिए, और ऐसे लोगों को सभा में बोलने से रोकने का आत्मविश्वास होना चाहिए, और यह बिना भय के करना चाहिए।

¹² एक क्रेते के निवासी ने अपने लोगों के बारे में स्वयं कहा है, “क्रेते के निवासी सदा झूठ बोलते हैं, वे जंगली पशु हैं, वे आलसी हैं, पेटू हैं।” ¹³ यह कथन सत्य है, इसलिए उन्हें बलपूर्वक डाँटो-फटकारो ताकि उनका विश्वास पक्का हो सके।

पौलुस क्रीट के कवि एपिमेनिडीस का उद्धरण देते हैं, जिन्होंने ग्रीक देवता ज़्यूस (आसमान और बिजली के देवता) के लिए एक भजन में ये शब्द लिखे थे। यह क्रीटवासियों के बारे में एक सामान्य रूप से प्रचलित रूढ़ि थी, जिसे इस कविता के माध्यम से लोकप्रिय संस्कृति में मजबूत किया गया था। (कुछ वैसा ही जैसे कैलिफ़ोर्निया को एक उदार राज्य मान लेना या यह मान लेना कि सभी कनाडाई लोग हॉकी खेलना जानते हैं।) पौलुस इस लोकप्रिय धारणा की पुष्टि करते हैं और कहते हैं कि क्रीटवासियों (क्रीट के यहूदी उपद्रवी) ने उनके तर्क को साबित किया और इस रूढ़ि की पुष्टि की।

¹³ यह कथन सत्य है, इसलिए उन्हें बलपूर्वक डाँटो-फटकारो ताकि उनका विश्वास पक्का हो सके। ¹⁴

यहूदियों के पुराने वृत्तान्तों पर और उन लोगों के आदेशों पर, जो सत्य से भटक गये हैं, कोई ध्यान मत दो।

- तीतुस 1:13b-14

टाइटस का कार्य उन्हें कड़ी निंदा करना था। दूसरे शब्दों में, टाइटस का काम था उन झूठे शिक्षकों को चुप कराना जो पैसे के लिए अपने झूठ फैला रहे थे, और इस प्रक्रिया में विश्वास और परिवारों को बर्बाद कर रहे थे। पौलुस टाइटस को केवल इन लोगों से अपील या सौदा करने के लिए नहीं कहता, बल्कि उन्हें पूरी तरह से चुप कराने के लिए प्रेरित करता है।

इसके अतिरिक्त, टाइटस को उन लोगों को फटकारना है जो इन झूठे विचारों को सुन रहे हैं और ऐसा करने से अपने विश्वास को खतरे में डाल रहे हैं। फटकार या उपदेश सदस्यों को सही शिक्षाओं (जो उन्हें पॉल, टाइटस और बुजुर्गों द्वारा दी गई हैं) पर ध्यान केंद्रित करने और झूठे शिक्षकों के व्यर्थ और विनाशकारी विचारों (किंवदंतियाँ, वंशावली तालिकाएँ, और मनुष्य द्वारा बनाए गए धार्मिक विचार जो स्वयं परमेश्वर के प्रकाशन के विपरीत हैं) से बचने के लिए निर्देशित करेगा।

¹⁵ पवित्र लोगों के लिये सब कुछ पवित्र है, किन्तु अशुद्ध और जिनमें विश्वास नहीं है, उनके लिये कुछ भी पवित्र नहीं है। ¹⁶ वे परमेश्वर को जानने का दावा करते हैं। किन्तु उनके कर्म दर्शाते हैं कि वे उसे जानते ही नहीं। वे घृणित और आज्ञा का उल्लंघन करने वाले हैं। तथा किसी भी अच्छे काम को करने में वे असमर्थ हैं।

- तीतुस 1:15-16

यहाँ, पौलुस इन लालची धोखेबाजों का एक और संदर्भ देते हैं। जो लोग शुद्ध हैं (मसीह के रक्त से शुद्ध किए गए) उनके लिए सब कुछ शुद्ध है। क्यों? क्योंकि विश्वासियों को पता है कि परमेश्वर ने जो कुछ बनाया है उसका उपयोग कैसे करना है। उदाहरण के लिए, भोजन प्रार्थना के माध्यम से शुद्ध होता है; धन आवश्यकताओं और दूसरों की आवश्यकताओं की देखभाल के लिए एक उपकरण है; विवाह के भीतर यौन संबंध सम्मानित और आशीषित है, आदि। हालांकि, अविश्वासियों के लिए कुछ भी शुद्ध नहीं है; वे धन्यवाद के बिना खाते हैं और परमेश्वर का अपमान करते हैं जो उन्हें खिलाता है। उनके लिए, धन स्वयं एक लक्ष्य है और परमेश्वर से इसके संबंध के बिना, यह आसानी से पूजा या मूर्तिपूजा का वस्तु बन जाता है। विश्वास के संदर्भ के बिना, यौन संबंध अपनी आध्यात्मिक घटक से रहित हो जाता है और केवल शारीरिक संतुष्टि उत्पन्न करने तक सीमित हो जाता है, बजाय इसके कि यह परिवार बनाने का एक साधन और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के लिए एक सहायक हो जैसा कि इसे मूल रूप से माना गया था।

पौलुस कहते हैं कि उनकी अविश्वास और आध्यात्मिक उपकरणों (परमेश्वर के बारे में शिक्षाओं) के दुरुपयोग के कारण, उनकी बुद्धि और विवेक दोनों दूषित हो गए थे और इस प्रकार ये पुरुष सत्य को देखने में असमर्थ हो गए थे। एक अंतिम सारांश बयान में वह निम्नलिखित कहते हैं:

- वे ईश्वर को जानने का दावा करते थे और उसे एक श्रेष्ठ तरीके से जानते थे। उनका कथन केवल शब्दों से समर्थित था। एक आत्म-घोषित आध्यात्मिक परिपक्वता और ज्ञान जिसका सत्य या बुद्धि में कोई आधार नहीं था।
- पौलुस याकूब की प्रतिध्वनि करता है जहाँ वह कहता है "तुम्हारे पास विश्वास है और मेरे पास कर्म हैं; मुझे अपने कर्मों के बिना अपना विश्वास दिखाओ, और मैं अपने कर्मों से तुम्हें अपना विश्वास दिखाऊंगा" याकूब 2:18. पौलुस टाइटस और चर्च को निर्देश देता है कि वे इन पुरुषों का न्याय उनके कर्मों/कृत्यों/क्रियाओं के आधार पर करें। उनके कर्मों ने ईश्वर को अस्वीकार किया क्योंकि वे वह नहीं उत्पन्न कर सके जो ईश्वर चाहता था: प्रेमपूर्ण कर्मों में प्रकट होता हुआ बढ़ता हुआ विश्वास (1 तीमुथियुस 1:5-7, गलातियों 5:6). ये पुरुष इसके विपरीत उत्पन्न कर रहे थे: विश्वास में हानि या भ्रम के साथ-साथ प्रेम से प्रेरित अच्छे कर्मों की स्पष्ट अनुपस्थिति। इसके विपरीत, जो वे उत्पन्न कर रहे थे वे थे विवाद, विभाजन और विश्वास की हानि।

इस बिंदु पर, पौलुस तीतुस की जिम्मेदारी के बारे में शिक्षा खंड समाप्त करता है कि वह योग्य पुरुषों को उठाए और नियुक्त करे जो चर्च का नेतृत्व करेंगे, सुसंगत शिक्षा बनाए रखेंगे और उन लोगों से प्रभावी ढंग से निपटेंगे जो अपनी झूठी शिक्षा और अधार्मिक जीवनशैली के साथ सभा में विभाजन और निराशा बो रहे हैं।

अगले भाग में प्रेरित तीतुस को एक उदाहरण और एक आदर्श प्रदान करेगा, जो वह इस युवा सुसमाचार प्रचारक से चाहता है कि वह स्थिर शिक्षा बनाए रखे और अगली पीढ़ी को सौंपे।